© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 673-678

दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि में सम्बन्ध का एक अध्ययन

मणिमाला
(शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक–शिक्षा संकाय
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

सारांश– प्रस्तुत अध्ययन में समस्या कथन के अन्तर्गत ''दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि में सम्बन्ध का एक अध्ययन'' किया गया है। इस अध्ययन को करने हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान की सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् दिव्यांग छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में प्रयागराज शहर में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् दिव्यांग 70 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों के बुद्धि को मापने के लिए एम. सी. जोशी, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान प्रयोगशाला, जोशपुर यूनिवर्सिटी, जोधपुर द्वारा निर्मित है एवं दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक निष्पत्ति के लिए उनके पिछली कक्षा की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक को विषयवार सम्मिलित किया गया है। निष्कर्ष रूप में पाया कि

- दिव्यांग छात्रों के बुद्धि का उनके हिन्दी, गणित, विज्ञान, अंग्रेजी एवं संस्कृत विषय विषय के शैक्षिक निष्पत्ति में धनात्मक सम्बन्ध है जबकि सामाजिक विज्ञान एवं कला विषय के शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध नहीं है।
- दिव्यांग छात्राओं की बुद्धि में कमी एवं वृद्धि का उनके हिन्दी, गणित एवं विज्ञान विषय के शैक्षिक निष्पत्ति में कमी एवं वृद्धि के मध्य धनात्मक सम्बन्ध है जबकि दिव्यांग छात्राओं की बुद्धि में कमी एवं वृद्धि का उनके अंग्रेजी, सामाजिक विज्ञान, संस्कृत एवं कला विषय के शैक्षिक निष्पत्ति में कमी एवं वृद्धि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

की–वर्ड– दिव्यांग, छात्र–छात्राएँ, शैक्षिक निष्पत्ति, बुद्धि, सम्बन्ध।

प्रस्तावना– बुद्धि एक ऐसा शस्त्र होता है, जिससे कि विशालकाय आकार लिये हुए हाथी को भी वश में किया जा सकता है। विभिन्न बुद्धि स्तर, समायोजन रूचि, महत्वाकांक्षा, व्यक्तित्व, उपलब्धि, अभिक्षमता, नैतिकता आदि वाले विभिन्न विद्यार्थी विद्यालय में एक साथ अध्ययन करते है। किसी भी व्यक्ति की सफलता उसकी बुद्धि लब्धि पर निर्भर करती है यह माना जाता है कि जिस व्यक्ति की बुद्धिलब्धि जितनी अधिक होती है वह उतना ही अधिक सफल होता है चाहे पढाई हो या अन्य कोई भी क्षेत्र। प्राचीन काल से आजतक बुद्धि का स्वरूप निश्चित नहीं हो पाया है कुछ लोग समस्या समाधान की योग्यता मानते है और कुछ पर्यावरण से सामंजस्य की योग्यता, स्टर्न के अनुसार बुद्धि व्यक्ति की वह सामान्य योग्यता है, जिसके द्वारा यह सचेत रूप से नवीन आवश्यकताओं के अनुसार चिंतन करता है। जीवन की नई समस्याओं एवं स्थितियों के अनुसार अपने

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 673-678

आपको ढालने की सामान्य मानसिक योग्यता बुद्धि कहलाती है। स्वस्थ शरीर है तो बुद्धि का विकास भी अच्छे प्रकार से होता है।

छात्रों की बुद्धि द्वारा प्राप्त शैक्षिक उपलब्धि स्कूल या कॉलेज के स्तर को व्यक्त करती है इसके अलावा यह कक्षा में छात्रों के स्तर को भी निर्धारित करती है। बुद्धि द्वारा प्राप्त शैक्षिक उपलब्धि कई चरों पर निर्भर करती है–जैसे लिंग, जाति, स्थानीय भिन्नता, स्कूलों के प्रकार, अभिभावकों की शैक्षिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि, पर्यावरण में भिन्नता और लिंग का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव प्रमुख रूप से दृष्टिगत होता है। विद्यार्थियों की उपलब्धि या उनके ज्ञान की परीक्षा प्राचीन काल से ही किसी न किसी रूप में होती रही है प्राचीन काल में जब गुरू के पास लोग ज्ञानार्जन के उद्देश्य से जाते थे, तो पहले उनके ज्ञान, जिज्ञासा, भाव, एवं निष्पत्ति की परीक्षा ली जाती थी। इसी प्रकार तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला में जो विद्यार्थी प्रवेश पाना चाहते थे, उन्हें पहले द्वार–पंण्डितों के प्रश्नों का उत्तर देना पड़ता था। इस प्रकार उनकी निष्पत्ति परीक्षा ली जाती थी।

जब से शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्तिगत भिन्नता के विचार को महत्व मिला है तब से यह बात आवश्यक रूप से समझी जाती है कि छात्रों की व्यक्तिगत विशेषताओं, उनके द्वारा अर्जित ज्ञान बुद्धि आदि के आधार पर शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिये। निष्पत्ति परीक्षा का निर्माण बालक की व्यक्तिगत विशेषताओं तथा उनके ज्ञान बुद्धि के मापन की समस्या के समाधान के लिये किया गया।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में व्यक्ति के सब प्रकार के अनुकूलन पर बल दिया जाता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल यही नहीं है कि उसे ज्ञान प्राप्त हो अपितु यह भी है कि उसका समुचित शारीरिक, संवेगात्मक, मानसिक तथा सामाजिक अनुकूलन हो।

बदलते परिवेश में जहाँ शिक्षा एवं शिक्षण में नित नये प्रयोग किये जा रहे हैं, जैसे शिक्षा व शिक्षण के स्तर को कैसे सुधारा जाय? कैसे शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाय, ताकि वे बालकों के मनोविज्ञान को समझ सकें, उनकी योग्यता को समझ सकें, उनकी बुद्धि के स्तर को समझ सकें।

पूर्व शोध अध्ययनों से ज्ञात होता है कि शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि में सकारात्मक सम्बन्ध होता है। जिसमें **सिंह, प्रमिला (2017)** ने निष्कर्ष रूप में पाया– ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की तुलना में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक सोच, रहन–सहन, शैक्षिक विचारधारा तथा शैक्षिक सोच में कही अधिक प्रबलता पायी गयी। जबकि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में पारिवारिक रहन–सहन, आवासीय व्यवस्था, विद्यालयों की दूरी आदि उनके लक्ष्यों में बाधा उत्पन्न करती है। **चन्नावार, सोनाली एवं खान, तरन्नुम (2018)** ने बौद्धिक क्षमता लगभग समान होती है और वे समान रूप से शिक्षा ग्रहण करते हुए विकास करते है।

अतः वर्तमान समय में सामान्य बालकों की तरह दिव्यांग बालक भी अपने बुद्धि का विकास कर देश में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहे हैं। अतः वर्तमान में दिव्यांग बालकों के बुद्धि का अध्ययन तथा उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध को देखना महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

समस्या कथन–

"दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि में सम्बन्ध का एक अध्ययन।"

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. दिव्यांग छात्रों के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. दिव्यांग छात्राओं के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

1. दिव्यांग छात्रों के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 673-678

2. दिव्यांग छात्राओं के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन **दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि में सम्बन्ध का एक अध्ययन** करने के लिए किया गया है। इस अध्ययन को करने हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान की सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् दिव्यांग छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में प्रयागराज शहर में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् दिव्यांग 70 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के बुद्धि को मापने के लिए एम.सी. जोशी, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान प्रयोगशाला, जोशपुर यूनिवर्सिटी, जोधपुर द्वारा निर्मित है एवं दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक निष्पत्ति के लिए उनके पिछली कक्षा की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक को विषयवार सम्मिलित किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीकी

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या हेतु सहसम्बन्ध गुणांक सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. दिव्यांग छात्रों के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि में सम्बन्ध का अध्ययन करना –

H_1 दिव्यांग छात्रों के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध है।

H_{01} दिव्यांग छात्रों के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–1

दिव्यांग छात्रों के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि	छ	सह–सम्बन्ध गुणांक ;तद्ध	सार्थकता स्तर
हिन्दी–बुद्धि	35	0ण्5361′	ण्05
गणित–बुद्धि	35	0ण्4809′	ण्05
विज्ञान–बुद्धि	35	0ण्6035′	ण्05
अंग्रेजी–बुद्धि	35	0ण्4623′	ण्05
सामाजिक विज्ञान–बुद्धि	35	0ण्0216	ण्05
संस्कृत–बुद्धि	35	0ण्3810′	ण्05
कला–बुद्धि	35	0ण्0335	ण्05

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 673-678

' .05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या–1 से स्पष्ट है कि दिव्यांग छात्रों के हिन्दी, गणित, विज्ञान, अंग्रेजी एवं संस्कृत विषय के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.5361, 0.4809, 0.6035, 0.4623 एवं 0.3810 है जो 33 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.325 से अधिक है। यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है दिव्यांग छात्रों के हिन्दी, गणित, विज्ञान, अंग्रेजी एवं संस्कृत विषय के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है। अतः प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि दिव्यांग छात्रों के बुद्धि में कमी एवं वृद्धि का उनके हिन्दी, गणित, विज्ञान, अंग्रेजी एवं संस्कृत विषय के शैक्षिक निष्पत्ति में कमी एवं वृद्धि के मध्य सम्बन्ध है।

दिव्यांग छात्रों के सामाजिक विज्ञान एवं कला विषय के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.0216 एवं 0.0335 है जो 33 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.325 से कम है। यह मान 0.05 स्तर पर असार्थक है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है दिव्यांग छात्रों के सामाजिक विज्ञान एवं कला विषय के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है। अतः प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि दिव्यांग छात्रों के बुद्धि में कमी एवं वृद्धि का उनके सामाजिक विज्ञान एवं कला विषय के शैक्षिक निष्पत्ति में कमी एवं वृद्धि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि दिव्यांग छात्रों के बुद्धि का उनके हिन्दी, गणित, विज्ञान, अंग्रेजी एवं संस्कृत विषय के शैक्षिक निष्पत्ति में धनात्मक सम्बन्ध है जबकि सामाजिक विज्ञान एवं कला विषय के शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

2. दिव्यांग छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि में सम्बन्ध का अध्ययन करना –

H_2 दिव्यांग छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध है।

H_{02} दिव्यांग छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–2

दिव्यांग छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि	छ	सह–सम्बन्ध गुणांक ;तद्ध	सार्थकता स्तर
हिन्दी–बुद्धि	35	0ण्4528′	ण्05
गणित–बुद्धि	35	0ण्3890′	ण्05
विज्ञान–बुद्धि	35	0ण्2808′	ण्05
अंग्रेजी–बुद्धि	35	0ण्0576	ण्05
सामाजिक विज्ञान–बुद्धि	35	0ण्1406	ण्05
संस्कृत–बुद्धि	35	0ण्2592	ण्05
कला–बुद्धि	35	0ण्0362	ण्05

' .05 स्तर पर सार्थक

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 673-678

सारणी संख्या–2 से स्पष्ट है कि दिव्यांग छात्राओं की हिन्दी, गणित, विज्ञान विषय के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.4528, 0.3890 एवं 0.2808 है जो 33 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.273 से अधिक है। यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है दिव्यांग छात्राओं की हिन्दी, गणित, विज्ञान विषय के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है। अतः प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि दिव्यांग छात्राओं की बुद्धि में कमी एवं वृद्धि का उनके हिन्दी, गणित एवं विज्ञान विषय के शैक्षिक निष्पत्ति में कमी एवं वृद्धि के मध्य सम्बन्ध है।

दिव्यांग छात्राओं की अंग्रेजी, सामाजिक विज्ञान, संस्कृत एवं कला विषय के शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.0576, 0.1406, 0.2592 एवं 0.0362 है जो 33 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.273 से कम है। यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है दिव्यांग छात्राओं की हिन्दी, अंग्रेजी, सामाजिक विज्ञान, संस्कृत एवं कला में शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि के मध्य कोई सहसम्बन्ध नहीं है। अतः प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि दिव्यांग छात्राओं की बुद्धि में कमी एवं वृद्धि का उनके अंग्रेजी, सामाजिक विज्ञान, संस्कृत एवं कला विषय के शैक्षिक निष्पत्ति में कमी एवं वृद्धि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

निष्कर्ष–

- दिव्यांग छात्रों के बुद्धि का उनके हिन्दी, गणित, विज्ञान, अंग्रेजी एवं संस्कृत विषय विषय के शैक्षिक निष्पत्ति में धनात्मक सम्बन्ध है जबकि सामाजिक विज्ञान एवं कला विषय के शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध नहीं है।
- दिव्यांग छात्राओं की बुद्धि में कमी एवं वृद्धि का उनके हिन्दी, गणित एवं विज्ञान विषय के शैक्षिक निष्पत्ति में कमी एवं वृद्धि के मध्य धनात्मक सम्बन्ध है जबकि दिव्यांग छात्राओं की बुद्धि में कमी एवं वृद्धि का उनके अंग्रेजी, सामाजिक विज्ञान, संस्कृत एवं कला विषय के शैक्षिक निष्पत्ति में कमी एवं वृद्धि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

सुझाव–

दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं को भाषा, चिन्तन के माध्यम और अभिव्यक्ति की आधारशिला है। अतः शिक्षक को दिव्यांग बालकों के भाषा–ज्ञान में वृद्धि करनी चाहिए ज्ञान, चिन्तन का मुख्य स्तम्भ है। अतः शिक्षक को दिव्यांग बालकों के ज्ञान का विस्तार करना चाहिए। तर्क, वाद–विवाद और समस्या–समाधान, चिन्तन शक्ति को प्रयोग करने का अवसर देते हैं। अतः शिक्षक को दिव्यांग बालकों को इन बातो के लिए अवसर देना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- ठाकुर, दिनेश एवं अन्य (2013). विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की बुद्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, सन्दर्भ, *वैश्विक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य*, 3(1), पृ0 21–27
- त्रिपाठी, रत्नेश कुमार (2014). शासकीय एवं अशासकीय हाईस्कूल कक्षा के अध्ययनरत् छात्रों की बुद्धि, नैतिक मूल्य, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का समीक्षात्मक अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड साइंस रिसर्च रिव्यू*, वॉल्यूम–1, इश्शू–1, पृ0 70–82
- सिंह, मनवीर (2014). माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की बुद्धि, सृजनात्मक और आकांक्षा स्तर पर उनके शिक्षा बोर्डों के प्रभाव का अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन ऑल सब्जेक्ट इन मल्टी लैग्वेज*, वॉल्यूम–2, इश्शू–4, पृ0 24–31

- सिंह, सविता एवं सिंह बीना (2016). महाविद्यालय के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, *युगांतर : अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका*, वर्ष–7, अंक–29, पृ0 6–9
- सिंह, सविता एवं यादव, प्रज्ञा (2016), किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का उनके मूल्य पर प्रभाव एक अध्ययन, *युगांतर : अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका*, वर्ष–7, अंक–29, पृ0 10–13
- शर्मा, नीरज कुमार (2017). हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों की चिन्ता का बुद्धि, लिंग एवं आवास के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन, *नार्थ एशियन इन्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी*, वॉल्यूम–3, इश्शू–9, पृ0 80–90
- सिंह, प्रमिला (2017). रींवा जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च*, वॉल्यूम–3, इश्शू–9, पृ0 183–186
- चन्नावार, सोनाली एवं खान, तरन्नुम (2018). उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में सामान्य वर्ग तथा वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के बीच सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन, *आयुषी इण्टरनेशनल इण्टरडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल*, वॉल्यूम–ट, इश्शू–प्ट, पृ0 381–383